ISSN 2278-8808
UGC APPROVED SR. NO. 45269
SJIF 2016 = 6.177
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

मध्यप्रदेश कृषि में सरचनात्मक परिवर्तन एवं चुनौतियाँ –उद्यानिकी के संदर्भ में

अलका जैन, Ph. D.

स.प्रा. अर्थशास्त्र, श्री अटलबिहारी वाजपेयी,शा. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय ,इंदौर (म.प्र.)

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

विश्व में जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा एवं क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवाँ स्थान रखने वाला भारत वर्तमान में आर्थिक वृद्धि में प्रथम, क्रय–शक्ति में तृतीय तथा जी.डी.पी. की दृष्टि से पाँचवाँ स्थान रखता है। युगांतरकारी जैम, विमुद्रीकरण तथा जी.एस.टी. जैसे क्रान्तिकारी सुधारों के साथ जहाँ भारतीय अर्थव्यवस्था नये युग में प्रवेश कर रही है, वहीं आज भी भारत की 55 प्रतिशत आबादी तथा 72 प्रतिशत ग्रामीण आबादी कृषि पर आश्रित है। कृषि प्रधान भारत की विडम्बना है कि आधे से अधिक मानवीय पूँजी कृषि एवं सम्बद्ध कार्यों में लगने के बावजूद 2014–15 में भारतीय कृषि 1.2 प्रतिशत की विकास दर के साथ सकल घरेलू उत्पाद में 16 प्रतिशत योगदान ही दे पाई है। वास्तव में हरित क्रान्ति एवं श्वेत–क्रान्ति के बाद इन्द्रधनुषी क्रान्ति के माध्यम से कृषि की स्थिति को सुदृढ़ करने के प्रयास से 2016–17 में कृषि क्षेत्र की विकास–दर 5 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

महात्मा गाँधी का कथन था कि ''भारत गाँव में रहता है और कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की आत्मा है।'' स्वतंत्रता से अब तक ढाई गुना जनसंख्या वृद्धि के बावजूद चिरकालिक खाद्य अभाव से खाद्यान्न आत्मनिर्भरता तक का लम्बा सफर तय करने वाली भारतीय कृषि वर्तमान में अन्नकेन्द्रित, क्षेत्रीय रूप से पक्षपाती एवं निवेश प्रकृष्ट होने से भूमि, जल एवं उर्वरक का अधिक मात्रा में उपयोग करती है, यही कारण है कि पिछले कुछ वर्षों में इसकी विकास दर अत्यंत कम रही है किंतु 'इन्द्रधनुषी' क्रान्ति' बदलते आहार पेटर्न' के अनुरूप उत्पादन कम लागत से अधिक लाभ की नीति एवं हर स्तर पर रणनीतिक सुधार से म.प्र. की कृषि ने पिछले कुछ वर्षों में अद्भुत प्रगति की हैं। इस प्रगति का एक महत्वपूर्ण आधार उद्यानिकी कृषि है।

* अध्ययन विधि एवं समंक स्त्रोत :

प्रस्तुत शोध पत्र पूर्णतः द्वितीयक समंकों पर आधारित है। समंक स्रोत म.प्र. कृषि आर्थिक सर्वेक्षण, म.प्र. का आर्थिक सर्वेक्षण, आर्थिक समीक्षा, शासकीय एवं शोध प्रतिवेदन एवं समाचार पत्र हैं। अध्ययन क्षेत्र मध्यप्रदेश एवं अध्ययन अवधि 2005–2006 से 2015–16 तक (दस वर्ष) हैं। सांख्यिकीय

तकनीक में प्रतिशत, औसत, सूचकांक इत्यादि का प्रयोग तथा अध्ययन हेतु विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

* अध्ययन के उद्देश्य :

इस शोध पत्र के अध्ययन के मुख्य उद्देश्य हैं :–

1. म.प्र. कृषि में उद्यानिकी उत्पादन की प्रगति का अध्ययन करना तथा इसके योगदान को जानना।
2. उद्यानिकी फसलों में भारत में म.प्र. की स्थिति का अध्ययन करना।
3. विभिन्न उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की प्रगति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. उद्यानिकी उत्पादन में वृद्धि के कारणों का विश्लेषण करना।
5. चुनौतियों एवं समस्याओं को ज्ञात करना तथा सुझाव प्रस्तुत करना।

* मध्यप्रदेश में उद्यानिकी : कृषि प्रगति का आधार

भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 9 प्रतिशत (308 लाख हेक्टेयर) एवं कुल जनसंख्या का 15 प्रतिशत (72 मिलियन) हिस्सा रखने वाला भारत का हृदय मध्य–प्रदेश 51 जिलों में 11 कृषि जलवायु क्षेत्र, पाँच फसली क्षेत्र के साथ वर्तमान में भारत के कुल अनाज उत्पादन में 10 प्रतिशत योगदान रखता है एवं राष्ट्रीय स्तर पर कृषि विकास एवं सकल घरेलू उत्पाद विकास में शीर्ष स्थान पर है। लगातार चौथी बार कृषि कर्मण अवार्ड प्राप्त कर चुका मध्यप्रदेश द्विफसल के साथ कुल जमीन के 78 प्रतिशत भाग पर बुवाई, कुल कार्यशील जनसंख्या का 69.8 प्रतिशत लोगों को रोजगार एवं ग्रामीण क्षेत्र की कुल कार्यशील जनसंख्या का 85.6 प्रतिशत जनसंख्या को आजीविका प्रदान कर जीडीपी में एक–तिहाई योगदान (34.8 प्रतिशत) दे रहा है। पिछले कुछ वर्षों में मध्यप्रदेश कृषि में होने वाले अद्भुत आमूलचूल परिवर्तन के कारण म.प्र. की कृषि देश में सर्वश्रेष्ठ कृषि आर्थिक वृद्धि बनाये हुए हैं। इन परिवर्तनों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन उद्यानिकी का बढ़ता क्षेत्र है।

उद्यानिकी कृषि की वह शाखा हैं जो बढ़ते पौधों के कला, विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं व्यापार से संबंधित है। इसके अंतर्गत फल, सब्जियों, नट्स, बीज, जड़ी–बूटी, औषधीय पौधों, स्प्राउट्स, मशरूम, फूल, शैवाल, समुद्री शैवाल तथा गैर खाद्य फसल घास तथा सजावटी पौधों की खेती सम्मिलित हैं।

उद्यानिकी फसलों का महत्व मनुष्य के भोजन में पौष्टिक तत्वों की पूर्ति, कृषकों की नकद आय बढ़ाने, विदेशी मुद्रा अर्जित करने, पर्यावरण में सुधार करने इत्यादि में निहित है। कृषि क्षेत्र के एक कोर क्षेत्र के रूप में उभरते हुए उद्यानिकी उत्पाद में फल और सब्जियाँ विटामिन, खनिज एवं कार्बोहाइड्रेट्स के बहुत अच्छे स्रोत है। सुरक्षात्मक खाद्य पदार्थ के रूप में मनुष्य के स्वास्थ्य और सुख से सीधे जुड़ कर उद्यानिकी फसलें देश और प्रदेश की समृद्धि में महत्वपूर्ण एवं जीवंत भूमिका निभा रही है। तत्काल नकदी, श्रम गहन प्रकृति, पूरे वर्ष रोजगार, छोटे एवं सीमांत जोत पर खेती, अत्यधिक लाभकारी, रोग

प्रतिरोधी शंकर सब्जियों का उत्पादन, सुगंधित जड़ी–बूटियाँ, कन्द, फसलें, उच्च मूल्य के मसाले, औद्योगिक उपयोग एवं निर्यात ने उद्यानिकी के क्षेत्र में क्रान्ति ला दी है।

आहार विशेषज्ञों के अनुसार मनुष्य के उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण आहार के लिए प्रतिदिन 85 ग्राम फल एवं 180 ग्राम सब्जी की आवश्यकता होती है किंतु मध्यप्रदेश में जनसंख्या एवं कुल उत्पादन की उपलब्धता के आधार पर प्रतिदिन प्रति व्यक्ति मात्र 27 ग्राम फल एवं 85 ग्राम सब्जी आहार हेतु उपलब्ध है। हालांकि पिछले कुछ वर्षों में कृषि विकास दर में तेजी से वृद्धि के कारण उद्यानिकी उत्पादन में भी तेजी से प्रगति हई है, किंतु आवश्यकतानुरूप अभी उत्पादन वृद्धि की ओर संभावनाएँ हैं।

*** मध्यप्रदेश में कृषि उत्पादन विकास दर :**

तालिका क्रमांक 1 में मध्यप्रदेश में कृषि विकास दर को भारत के संदर्भ में तुलनात्मक रूप से दर्शाया गया है :–

तालिका क्र.–1 भारत एवं म.प्र. में कृषि क्षेत्र की विकास दर (वर्ष 2004–05 के मूल्य पर)

वर्ष	म.प्र. की कृषि विकास दर	सूचकांक	भारत की कृषि विकास दर	सूचकांक
2005–06	3.13	100	5.53	100
2006–07	3.84	123	4.13	75
2007–08	2.40	77	6.34	115
2008–09	9.07	290	– 0.27	– 5
2009–10	9.88	316	0.41	07
2010–11	1.06	34	9.54	173
2011–12	18.90	604	5.34	97
2012–13	20.44	653	0.91	17
2013–14	22.41	716	4.93	89
2014–15	18.83	602	1.2	22
औसत दशक वृद्धि दर	10.99	–	3.86	–

स्त्रोत :– म.प्र. का कृषि आर्थिक सर्वेक्षण, 2016, पृष्ठ क्र. 32

Statisticstimes.com, krishijagran.com.

तालिका क्र. 1 से स्पष्ट है कि वर्ष 2005–06 से 2014–15 तक भारत की कृषि विकास दर में उतार–चढ़ाव रहे हैं, वहीं मध्यप्रदेश की कृषि विकास दर में 2005–06 से लगातार वृद्धि (केवल वर्ष 2007–08 एवं 2010–11 को छोड़ कर) हुई है। जहाँ भारत की कृषि विकास दर सर्वाधिक 2010–11 में 9.54 प्रतिशत रही, वहीं मध्यप्रदेश की सर्वाधिक कृषि विकास दर 2013–14 में 22.41 प्रतिशत रही है। वर्ष 2014–15 में भारत की कृषि विकास दर मात्र 1.2 प्रतिशत रही है, वहीं मध्यप्रदेश की कृषि विकास दर 18.83 प्रतिशत रही है। यदि दशक विकास दर पर दृष्टि डाले तो ज्ञात होता है कि भारत की औसत विकास दर 3.86 प्रतिशत रही, वहीं मध्यप्रदेश की औसत विकास दर 10.99 प्रतिशत रही है। उल्लेखनीय है कि भारत की कृषि विकास दर 2008–09 में – 0.27, 2009–10 में 0.41, 2012–13 में 0.91 तथा 2014–15 में 1.2 प्रतिशत अत्यंत ही दयनीय रही है। वहीं म.प्र. की कृषि विकास दर पिछले चार वर्षों से लगातार 18 प्रतिशत से अधिक रही है, जो भारत में सर्वाधिक है।

* म.प्र. में विभिन्न फसल समूह में उद्यानिकी फसल क्षेत्रफल की स्थिति :

वर्तमान में विभिन्न फसल क्षेत्रफल समूह में उद्यानिकी का क्षेत्रफल तेजी से बढ़ रहा है। तालिका क्र. 2 विभिन्न वर्षों में विभिन्न फसल समूह क्षेत्रफल को दर्शाती है :–

तालिका क्र. – 2 मध्यप्रदेश में विभिन्न फसल समूह में उद्यानिकी फसलों का क्षेत्रफल : ('000 हैक्टेयर में)

वर्ष	अनाज	दलहन	तिलहन	वाणिज्यिक फसलें	उद्यानिकी फसलें	अन्य	कुल फसली क्षेत्रफल
2005–06	7555	4325	6045	655	329	802	19711
2006–07	7981	4270	6143	698	372	752	20216
2007–08	7731	4404	6564	702	340	812	20552
2008–09	7636	4637	6714	673	333	769	20760
2009–10	7921	4802	6984	705	715	386	21513
2010–11	8060	5215	7065	670	823	213	22046
2011–12	8733	4779	7206	714	1172	243	22847
2012–13	9094	4692	7575	662	1426	n.a.	22847
2013–14	9639	4728	7923	682	1480	n.a.	24047
2014–15	9909	5238	7010	747	1549	n.a.	24047
2015–16	–	–	–	–	2450	–	–
2005–06 की तुलना में 2014–15 में सूचकांक	**131.16**	**121.14**	**115.96**	**114.05**	**470.82**	–	**122.00**
2014–15 में कुल फसली क्षेत्रफल का प्रतिशत	**41.21**	**21.78**	**29.15**	**3.12**	**6.44**	–	**100**

स्त्रोत :– म.प्र. का आर्थिक सर्वेक्षण, 2016, पृष्ठ क्र. 44.

तालिका क्र. 2 से स्पष्ट है कि म.प्र. में मुख्य रूप से खाद्यान्न उत्पादन (अनाज + दलहन 62 प्रतिशत फसली क्षेत्र में) किया जाता है। वर्ष 2014–15 में कुल फसली क्षेत्र के 41 प्रतिशत पर अनाज, 21 प्रतिशत पर दलहन, 29 प्रतिशत पर तिलहन, 6 प्रतिशत पर उद्यानिकी तथा 3 प्रतिशत पर वाणिज्यिक फसलें कपास तथा गन्ना उत्पादित किया जाता है। यदि हम 2005–06 से 2014–15 की तुलना करें तो पाते हैं कि पिछले एक दशक में अनाज उत्पादन क्षेत्र में 31.16 प्रतिशत, दलहन उत्पादन क्षेत्र में 21.14 प्रतिशत, तिलहन उत्पादन क्षेत्र में 15.96 प्रतिशत, वाणिज्यिक फसल क्षेत्र में 14.05 प्रतिशत वृद्धि हुई है जबकि उद्यानिकी उत्पादन क्षेत्र में 370.82 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2015–16 में 644.68 प्रतिशत वृद्धि हुई है अर्थात् सभी फसलों का क्षेत्र एक दशक में लगभग डेढ़ गुना बढ़ा है, जबकि उद्यानिकी क्षेत्र में सात गुना से अधिक वृद्धि हुई है जो यह स्पष्ट करती है कि पिछले कुछ वर्षों में मुख्य रूप से 2009–10 से उद्यानिकी फसल क्षेत्रफल में तेजी से विस्तार हुआ है।

* मध्यप्रदेश में मुख्य उद्यानिकी फसलों का क्षेत्रफल :

म.प्र. में उद्यानिकी एक बढ़ता हुआ क्षेत्र है। वर्ष 2009–10 से 2015–16 तक उद्यानिकी फसलों का क्षेत्रफल 3.4 गुना बढ़ा है। तालिका क्रमांक 3 म.प्र. में उद्यानिकी फसलों का क्षेत्रफल दर्शाती है :–

तालिका क्र. – 3 मध्यप्रदेश में उद्यानिकी फसलों का क्षेत्रफल (हैक्टेयर में)

वर्ष	फल	सब्जी	मसाले	फूल	औषधीय तथा सुगंधित	कुल	सूचकांक	वार्षिक वृद्धि दर
2009–10	112380	248380	319350	6590	29085	715785	100	–
2010–11	132380	243680	365850	7660	33585	823155	115	15.00
2011–12	163864	504409	468704	15613	43594	1196184	167	45.32
2012–13	204648	603674	539170	16515	62634	1426641	199	19.27
2013–14	212076	625347	561402	17081	63956	1479862	207	3.73
2014–15	228784	666414	571165	17750	65617	1549730	217	4.72
2015–16	–	–	–	–	–	245082	342	58.09
2009–10 की तुलना में 2014–15 में सूचकांक	203.58	268.30	178.85	269. 34	225.60	216.51	–	–
2014–15 में कुल का प्रतिशत	14.76	43.00	36.86	1.15	4.23	100	–	–

स्त्रोत :– म.प्र. कृषि आर्थिक सर्वेक्षण, पृष्ठ क्र. 59.

तालिका क्र. 3 से स्पष्ट है कि वर्ष 2009–10 में म.प्र. में कुल उद्यानिकी फसलों का क्षेत्रफल 7,15,755 हैक्टेयर था, जो लगातार बढते हुए 2015–16 में 24,50,082 हैक्टेयर हो गया अर्थात् क्षेत्रफल में 3.4 गुना से अधिक वृद्धि हुई है। वार्षिक वृद्धि दर पर दृष्टि डाले तो सर्वाधिक 2015–16 में 50.09 प्रतिशत तथा 2011–12 में 45.32 प्रतिशत रही है, वहीं सबसे कम वृद्धि 2013–14 में 3.73 प्रतिशत रही है। वर्तमान में उद्यानिकी फसलों के क्षेत्र विस्तार में अधिक वृद्धि का कारण इन फसलों का लाभकारी होना, तत्काल नकदी होना, स्वास्थ्य की दृष्टि से सुरक्षात्मक होना, मुख्य रूप से सब्जियाँ एवं फल का रोग प्रतिरोधी होना है।

यदि हम विभिन्न उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल की वृद्धि दर की तुलना करे तो स्पष्ट होता है कि 2009–10 की तुलना में 2014–15 में सर्वाधिक वृद्धि फूलों में 169.3 प्रतिशत हुई है, जबकि सब्जियों में 168.3 प्रतिशत, औषधीय तथा सुगंधित वस्तुओं में 125.6 प्रतिशत, फलों में 103.58 प्रतिशत तथा मसालों में सबसे कम 78.85 प्रतिशत वृद्धि हुई है। कुल उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल में 2014–15 में सर्वाधिक हिस्सा 43 प्रतिशत सब्जियों का हैं जबकि मसालों का 36.86 प्रतिशत, फलों का 14.76 प्रतिशत, औषधीय तथा सुगंधित वस्तुओं का 4.23 प्रतिशत और सबसे कम फलों का हिस्सा 1.15 प्रतिशत है। उल्लेखनीय है कि जहाँ फूलों की वृद्धि दर सबसे अधिक है, वहीं फूलों का हिस्सा सबसे कम है।

*** मध्यप्रदेश में मुख्य उद्यानिकी फसलों के उत्पादन की स्थिति :**

कृषि विविधीकरण एवं नव प्रवर्तन के फलस्वरूप उद्यानिकी क्षेत्र में तेजी से विस्तार हुआ हैं। फसली क्षेत्रफल में वृद्धि के साथ उत्पादन में भी तेज गति से वृद्धि हुई है। उद्यानिकी फसलों के उत्पादन की स्थिति को तालिका क्रमांक 4 द्वारा दर्शाया गया है :–

तालिका क्र. – 4 मध्यप्रदेश में मुख्य उद्यानिकी फसलों का उत्पादन (लाख मैट्रिक टन में)

वर्ष	फल	सब्जी	मसाले	फूल	औषधीय तथा सुगंधित	कुल	सूचकांक
2009–10	28.64	32.42	4.19	0.05	1.74	67.04	100
2010–11	33.73	37.00	4.82	0.06	2.01	77.62	115.78
2011–12	36.03	100.91	28.91	1.51	1.05	168.41	251.21
2012–13	56.25	124.53	41.13	1.93	3.93	227.77	339.75
2013–14	58.46	131.18	42.89	2.00	4.00	238.53	355.80
2014–15	58.02	141.22	44.68	2.08	1.08	247.08	368.56
2009–10 की तुलना में 2014–15 में सूचकांक (2009–10=100)	202.58	435.60	1066.35	4160	62.07	368.56	–
2014–15 में कुल का प्रतिशत	23.48	57.16	18.08	0.84	0.44	100	–

स्त्रोत :– मध्यप्रदेश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण, 2016, पृष्ठ क्र. 59.

तालिका क्र. 4 से स्पष्ट है कि हाल के वर्षों में, मध्यप्रदेश में उद्यानिकी फसलों के उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई है। वर्ष 2009–10 में उद्यानिकी उत्पादन 67.04 लाख मैट्रिक टन था जो 2014–15 में बढ़कर 247.08 लाख मैट्रिक टन हो गया अर्थात् लगभग चार गुना बढ़ गया, जिसमें फल के उत्पादन में दो गुना, सब्जियों में चार गुना, मसालों में 10 गुना, फूलों में सबसे अधिक 40 गुना उत्पादन में वृद्धि हुई जबकि औषधीय तथा सुगंधित वस्तुओं के उत्पादन में 37.93 प्रतिशत की कमी हो गयी है, हालांकि औषधीय तथा सुगंधित वस्तुओं के उत्पादन में 2013–14 में लगभ दो गुना वृद्धि हुई थी। यदि उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल पर दृष्टि डाले तो स्पष्ट होता है कि 2009–10 से 2014–15 की अवधि में क्षेत्रफल में लगभग दो गुना वृद्धि हुई है जबकि उत्पादन में लगभग चार गुना वृद्धि हुई है। यदि हम विभिन्न उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की तुलना करे तो विचित्र स्थिति दिखाई देती हैं। जहाँ फलों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन दोनों ही दो गुना बढ़ा हैं, वहीं सब्जियों का क्षेत्रफल ढाई गुना जबकि उत्पादन चार गुना, मसालों का क्षेत्रफल दो गुना, जबकि उत्पादन 10 गुना एवं फूलों का क्षेत्रफल ढाई गुना जबकि उत्पादन 40 गुना बढ़ा है। वहीं औषधीय एवं सुगंधित वस्तुओं का क्षेत्रफल दो गुना से अधिक बढ़ा, जबकि उत्पादन लगभग आधा रह गया अर्थात् क्षेत्रफल विस्तार के बावजूद उत्पादन में कमी हो गई। यह स्थिति स्पष्ट करती हैं कि उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन वृद्धि में आनुपातिक संबंध नहीं है। कुल उद्यानिकी फसलों के उत्पादन में 2014–15 में जहाँ सर्वाधिक 57.16 प्रतिशत हिस्सा सब्जियों के उत्पादन का है, वहीं सबसे कम .44 प्रतिशत हिस्सा औषधीय तथा सुगंधित वस्तुओं का है। फलों के उत्पादन का 23.48 प्रतिशत, मसालों का 18.08 प्रतिशत तथा फूलों का .84

प्रतिशत योगदान रहा है। यदि भारत में मध्यप्रदेश की स्थिति देखें तो उद्यानिकी फसलों के उत्पादन में मध्यप्रदेश का चौथा स्थान है। तालिका क्र. 5 भारत एवं मध्यप्रदेश में 2014–15 में उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की स्थिति को दर्शाती हैं :–

* उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में मध्यप्रदेश की भारत में स्थिति :

वर्ष 2014–15 में भारत में कुल 23,410 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में 2,80,986 हजार मैट्रिक टन उत्पादन हुआ हैं जिसमें मध्यप्रदेश 1,549 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में 24,708 हजार मैट्रिक टन उत्पादन के साथ भारत में चौथा स्थान रखता हैं। तालिका क्र. 5 उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में भारत में म.प्र. की स्थिति दर्शाती है :–

तालिका क्र. – 5 भारत एवं मध्यप्रदेश में उद्यानिकी फसलों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन (2014–15) क्षेत्रफल '000 हैक्टेयर में उत्पादन '000 मैट्रिक टन में

मद	भारत				मध्यप्रदेश				भारत में म.प्र. का प्रतिशत हिस्सा		भारत में म.प्र. का स्थान*
	क्षेत्रफल	कुल का %	उत्पादन	कुल का %	क्षेत्रफल	कुल का %	उत्पादन	कुल का %	क्षेत्रफल	उत्पादन	
फल	6110	26.10	86602	30.82	228.784	14.46	5802	23.48	3.74	6.70	VII
सब्जी	9542	40.76	169478	60.32	666.414	43.00	14122	57.16	6.98	8.33	IV
मसाले	3317	14.17	6108	2.17	571.165	36.86	4468	18.08	17.22	7.32	VI
फूल	249	1.06	2143	0.76	17.750	1.15	208	0.84	7.13	9.71	III
औषधीय व (सुगंधित)	659	2.82	1000	0.36	65.617	4.23	108	0.44	9.96	10.8	I
प्लांटेशन	3534	15.10	15575	5.54	–	–	–	–	–	–	-
कुल	23410	100.00	280986	100.00	1549.73	100.00	24708	100	6.62	8.79	IV

स्त्रोत :– **Horticulture 2014-15 (Final), Summry National Horticulture Board**.

***Indian Horticulture data Base 2013-14.**

तालिका क्र. 5 से स्पष्ट है कि 2014–15 में मध्यप्रदेश भारत के कुल उद्यानिकी क्षेत्रफल में 6.62 प्रतिशत एवं कुल उद्यानिकी उत्पादन में 8.79 प्रतिशत भागीदारी के साथ देश में चौथे स्थान पर हैं। विभिन्न उद्यानिकी उत्पादन में जहाँ 10.8 प्रतिशत भागीदारी के साथ प्रदेश औषधीय तथा सुगंधित वस्तुओं उत्पादन में देश में प्रथम स्थान पर हैं, वहीं 9.71 प्रतिशत भागीदारी के साथ फूल उत्पादन में तृतीय स्थान पर, 8.33 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ सब्जी उत्पादन में चतुर्थ स्थान पर, 7.32 प्रतिशत हिस्से के साथ मसाला उत्पादन में VI स्थान पर तथा 6.7 प्रतिशत भागीदारी के साथ फल उत्पादन में VII स्थान पर हैं।

कुल उद्यानिकी उत्पादन में सर्वाधिक उत्पादन सब्जियों का भारत एवं मध्यप्रदेश में क्रमशः 60.32 प्रतिशत एवं 57.16 प्रतिशत है। वहीं उद्यानिकी क्षेत्रफल में भी सर्वाधिक हिस्सा सब्जियों का भारत एवं मध्यप्रदेश में क्रमशः 40.76 प्रतिशत एवं 43 प्रतिशत हैं। कुल क्षेत्रफल में जहाँ सबसे कम फूलों का क्षेत्रफल है जो भारत एवं मध्यप्रदेश में क्रमशः 1.06 प्रतिशत था 1.15 प्रतिशत है वहीं कुल उत्पादन में सबसे कम हिस्सा भारत एवं म.प्र. में औषधीय तथा सुगंधित वस्तुओं का जो क्रमशः 0.36 प्रतिशत तथा 0.44 प्रतिशत है। स्पष्ट है कि भारत एवं मध्यप्रदेश दोनों में ही कुल उद्यानिकी क्षेत्रफल एवं उत्पादन में सर्वाधिक योगदान सब्जियों का है। यदि हम सबसे कम पर दृष्टि डाले तो क्षेत्रफल में सबसे कम फूलों का तथा उत्पादन में सबसे कम औषधीय एवं सुगंधित वस्तुओं का योगदान हैं।

* मध्यप्रदेश में फलों के क्षेत्रफल तथा उत्पादन की स्थिति :

मध्यप्रदेश का फलों के उत्पादन में देश में 6 प्रतिशत भागीदारी के साथ सातवाँ स्थान है। यहाँ फलों में मुख्य रूप से केला, आम, मौसंबी, पपीता, अमरूद, सन्तरा तथा आँवला उत्पादित होता है। फल उत्पादन का क्षेत्रफल जहाँ 2011–12 में 1.6 लाख हैक्टेयर था वह बढ़कर 2014–15 में 2.2 लाख हेक्टेयर हो गया अर्थात् फलों के कुल क्षेत्रफल में 39.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

इसी प्रकार फलों का कुल उत्पादन 2011–12 में 36.03 लाख मैट्रिक टन से बढ़ कर 2014–15 में 58.02 लाख मैट्रिक टन हो गया अर्थात् फल उत्पादन में चार वर्षों में 61.03 प्रतिशत वृद्धि हुई। स्पष्ट है कि क्षेत्रफल की तुलना में उत्पादन में वृद्धि डेढ़ गुना ज्यादा हुई है। तालिका क्र. 6 मध्यप्रदेश में विभिन्न वर्षों में फलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन को दर्शाती है :–

तालिका क्र. – 6 मध्यप्रदेश में मुख्य फलों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन

फल	2011–12		2012–13		2013–14		2014–15		2014–15 में कुल का प्रतिशत	
	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन
केला	24783	13.79	25757	17.1	26272	17.35	26798	17.7	11.71	30.51
आम	18332	1.75	25183	3.76	25435	3.78	25689	3.84	11.23	6.62
मौसंबी	1435	0.17	8527	1.09	8527	1.1	8527	1.09	3.73	1.88
पपीता	10186	2.75	12536	4.13	13163	4.38	13821	4.55	6.04	7.84
अमरूद	16450	2.55	21282	8.01	22346	8.41	23463	8.83	10.26	15.22
संतरा	44197	6.48	49519	8.44	52490	8.94	55640	9.48	24.32	16.31
आँवला	11534	1.27	13700	3.67	13700	3.67	13700	3.67	5.99	6.33
अन्य	–	–	–	–	–	–	61146	8.86	26.72	15.26
कुल	163864	36.03	204648	56.25	212076	58.46	228784	58.02	100.00	100.00
वार्षिक वृद्धि दर	–	–	24.89	56.12	3.63	3.93	7.88	–0.75	–	–
सूचकांक	100	100	124.89	156.12	129.42	162.25	139.62	161.03	–	–

स्त्रोत :– म.प्र. कृषि आर्थिक सर्वेक्षण, 2016, पृष्ठ क्र. 61.

तालिका क्र. 6 से स्पष्ट है कि 2014–15 में फलों की खेती के क्षेत्रफल में सबसे अधिक क्षेत्रफल 24.32 प्रतिशत सन्तरे की खेती का रहा है जबकि केले का 11.71 प्रतिशत, आम का 11.23 प्रतिशत, अमरूद का 10.26 प्रतिशत, पपीता का 6.04 प्रतिशत, आँवले का 5.99 प्रतिशत तथा सबसे कम मौसंबी का 3.73 प्रतिशत रहा है।

मुख्य फलों के उत्पादन में 2014–15 में सर्वाधिक उत्पादन केले का 30.51 प्रतिशत रहा है जबकि सन्तरे का 16.34 प्रतिशत, अमरूद का 15.22 प्रतिशत, पपीता का 7.84 प्रतिशत, आम का 6.62 प्रतिशत, आँवले का 6.33 प्रतिशत तथा सबसे कम मौसम्बी का 1.88 प्रतिशत रहा है।

यदि वार्षिक वृद्धि पर दृष्टि डाले तो ज्ञात होता है कि कुल फलों के क्षेत्रफल की वार्षिक वृद्धि दर सर्वाधिक 2012–13 में 24.89 प्रतिशत रही जबकि 2013–14 में सबसे कम 3.63 प्रतिशत रही हैं। कुल फलों के उत्पादन में सर्वाधिक वार्षिक वृद्धि दर 56.12 प्रतिशत 2012–13 में रही जबकि सबसे कम 2014–15 में –0.75 प्रतिशत रही हैं। 2011–12 के आधार पर 2014–15 में कुल फलों का क्षेत्रफल सूचकांक 139.62 रहा जबकि उत्पादन सूचकांक 161.03 रहा है। अर्थात् क्षेत्रफल की तुलना में उत्पादन तेज गति से बढ़ा है। कुल मिला कर फलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि हुई है किंतु मांग के अनुरूप उत्पादन में वृद्धि की और संभावनाएँ हैं क्योंकि आहार विशेषज्ञों के अनुसार मनुष्य के उत्तम स्वास्थ्य एवं पोषण आहार के लिए प्रतिदिन प्रति व्यक्ति 85 ग्राम फल चाहिए जबकि मध्यप्रदेश में यह मात्र 27 ग्राम है।

*** मध्यप्रदेश में सब्जियों के क्षेत्रफल तथा उत्पादन की स्थिति :**

मध्यप्रदेश में कुल उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन में सर्वाधिक हिस्सा सब्जियों का हैं। कुल के 43 प्रतिशत क्षेत्र में 57.16 प्रतिशत उत्पादन के साथ म.प्र. का सब्जी उत्पादन में देश में चौथा स्थान है। सब्जियों में मुख्यतः आलू, प्याज, मीठा आलू, मटर, टमाटर, फूल गोभी, भिण्डी, बैंगन, लौकी तथा पत्ता गोभी का उत्पादन होता है। तालिका क्रमांक 7 मध्यप्रदेश में मुख्य सब्जियों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की स्थिति को दर्शाती है :–

तालिका क्र. – 7 मध्यप्रदेश में मुख्य सब्जियों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की स्थिति

सब्जियाँ	2011–12		2012–13		2013–14		2014–15		2014–15 में कुल का प्रतिशत	
	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन
आलू	87975	8.17	108874	22.99	109963	23.22	111062	23.45	16.67	16.61
मीठा आलू	2180	0.24	2507	0.45	2758	0.49	3033	0.54	0.46	0.38
प्याज	89955	21.77	111725	26.91	117311	28.26	123177	29.67	18.48	21.01
मटर	47302	4.52	53446	5.34	56118	5.6	58924	5.89	8.84	4.17

टमाटर	55311	13.5	62589	18.45	65718	19.37	69004	20.34	10.35	14.40
फूल गोभी	30434	5.77	24556	6.90	25047	7.04	25548	7.18	3.83	5.08
भिण्डी	23592	3.1	25737	2.97	26509	3.06	27304	3.15	4.10	2.23
बैंगन	30747	5.33	40703	7.16	42738	10.67	44875	11.2	6.73	7.93
लौकी	20900	4.17	11947	2.30	12544	2.42	13172	2.54	1.98	1.80
पत्ता गोभी	19033	3.76	19280	5.67	19666	5.78	20059	5.90	3.01	4.18
अन्य	—	—	—	—	—	—	169986	—	25.55	—
कुल	**504409**	**100.91**	**603674**	**124.53**	**625347**	**131.18**	**666414**	**141.22**	**100.00**	**100.00**
वार्षिक वृद्धि दर	00	00	19.6	23.41	3.59	5.34	6.57	7.65	—	—
2011—12 की तुलना में 2014—15 सूचकांक	100	100	119.6	123.41	123.98	129.99	132.12	139.95	—	—

स्त्रोत :— म.प्र. कृषि आर्थिक सर्वेक्षण, 2016, पृष्ठ क्र. 63.

(क्षेत्रफल हैक्टेयर में तथा उत्पादन लाख मैटिक टन में)

तालिका क्र. 7 से स्पष्ट है कि विभिन्न सब्जियों में 2014—15 में क्षेत्रफल में सर्वाधिक प्याज का 18.48 प्रतिशत है, जबकि आलू का 16.67 प्रतिशत, टमाटर का 10.35 प्रतिशत, मटर का 8.84 प्रतिशत, बैंगन का 6.7 प्रतिशत, भिण्डी का 4 प्रतिशत, फूल गोभी का 3.8 प्रतिशत, पत्ता गोभी का 3.01 प्रतिशत तथा सबसे कम मीठा आलू का .46 प्रतिशत है। कुल उत्पादन में सर्वाधिक प्याज का 21.01 प्रतिशत है जबकि आलू का 16.61 प्रतिशत, टमाटर का 14 प्रतिशत, बैंगन का 7.9 प्रतिशत, फूलन गोभी का 5 प्रतिशत, मटर तथा पत्ता गोभी का 4 प्रतिशत, भिण्डी का 2.2 प्रतिशत, लौकी का 1.8 प्रतिशत तथा सबसे कम मीठा आलू का 0.38 प्रतिशत उत्पादन हिस्सा है। अर्थात क्षेत्रफल एवं उत्पादन दोनों ही दृष्टि से प्याज प्रथम स्थान पर है। सब्जियों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की वार्षिक वृद्धि दर में उतार—चढ़ाव रहा हैं किंतु सर्वाधिक 2012—13 में क्रमशः 19.6 प्रतिशत तथा 23.41 प्रतिशत रही हैं। 2011—12 के आधार पर 2014—15 में क्षेत्रफल सूचकांक 132.12 तथा उत्पादन सूचकांक 139.95 रहा है अर्थात् क्षेत्रफल की तुलना में उत्पादन तेजी से बढ़ा है। हालांकि मांग के अनुरूप अभी भी यह पर्याप्त नहीं हैं क्योंकि मध्यप्रदेश में प्रतिदिन प्रति व्यक्ति 180 ग्राम सब्जी की आवश्यकता है जबकि यह केवल 85 ग्राम ही आहार हेतु उपलब्ध है अतः विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं उपायों द्वारा इसके उत्पादन में और वृद्धि की जा रही है।

* मध्यप्रदेश में मसालों के क्षेत्रफल तथा उत्पादन की स्थिति :

मध्यप्रदेश में मसालों की मुख्य फसलों में मिर्च, अदरक, लहसून तथा धनिये का उत्पादन होता है। भारत में म.प्र. लहसून तथा मिर्च में प्रथम स्थान तथा धनिये में द्वितीय स्थान रखता है। 2014–15 में कुल मसालों की खेती 5.7 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में हुई जो 2011–12 के 4.7 लाख हैक्टेयर क्षेत्र के मुकाबले 22 प्रतिशत अधिक है। इसी प्रकार कुल मसाला उत्पादन भी 2014–15 में 44.68 लाख मैट्रिक टन हुआ जो 2011–12 में 28.91 लाख मैट्रिक टन के मुकाबले 54.55 प्रतिशत अधिक है। तालिका क्र. 8 म.प्र. में मुख्य मसालों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन को दर्शाती है :–

तालिका क्र. – 8 मध्यप्रदेश में मुख्य मसालों के उत्पादन की स्थिति

मसाले	2011–12		2012–13		2013–14		2014–15		2014–15 में कुल का प्रतिशत	
	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन
मिर्च	116479	6.37	140667	12.6	147700	13.39	155085	14.06	27.15	31.47
अदरक	14399	2.66	25027	3.52	25528	3.59	26038	3.66	4.56	8.19
लहसून	94945	11.5	96923	11.5	98861	11.75	10039	11.98	17.65	26.81
धनिया	184527	4.89	188419	5.36	192187	5.47	196031	5.58	34.32	12.49
कुल	468704	28.91	539170	41.13	561402	42.89	**571165**	44.68	100	100
वार्षिक वृद्धि दर	–	–	15.03	42.3	4.12	4.30	1.74	4.20	–	–
सूचकांक	100	100	115.03	142.3	119.77	148.36	121.86	154.55	–	–

स्त्रोत :– मध्यप्रदेश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण, 2016, पृष्ठ क्र. 65.

(क्षेत्रफल हैक्टेयर में तथा उत्पादन लाख मैटिक टन में)

तालिका क्र. 8 से स्पष्ट है कि 2014–15 में कुल मसालों में सर्वाधिक 34.32 प्रतिशत क्षेत्र में धनिया बोया गया, वहीं मिर्च का क्षेत्रफल 27.15 प्रतिशत, लहसून का 17.65 प्रतिशत तथा अदरक का क्षेत्रफल सबसे कम 4.56 प्रतिशत रहा है। कुल उत्पादन में सर्वाधिक 31.47 प्रतिशत मिर्च का, 26.8 प्रतिशत लहसून का, 12.49 प्रतिशत धनिये का तथा सबसे कम 8.19 प्रतिशत, अदरक का उत्पादन रहा है। उल्लेखनीय है कि क्षेत्रफल में धनिये का हिस्सा सबसे अधिक है जबकि उत्पादन में सबसे अधिक मिर्च का हिस्सा है। 2011–12 से 2014–15 तक की अवधि में सर्वाधिक 121 प्रतिशत मिर्च उत्पादन में वृद्धि हुई जबकि लहसून में 38 प्रतिशत, धनिया में 14 प्रतिशत तथा अदरक में 4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वार्षिक वृद्धि दर को देखें तो क्षेत्रफल एवं उत्पादन दोनों में ही क्रमशः कमी हुई हैं। 2012–13 में सर्वाधिक वार्षिक वृद्धि क्षेत्रफल में 15 प्रतिशत तथा उत्पादन में 42 प्रतिशत वृद्धि हुई। फिर क्रमशः वृद्धि दर कम होती गई और 2014–15 में यह वृद्धि दर क्षेत्रफल में 1.7 प्रतिशत तथा उत्पादन में 4.2 प्रतिशत हो गई।

*** मध्यप्रदेश में फूलों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन की स्थिति :**

उच्च मूल्य कारक फूलों का क्षेत्रफल मध्यप्रदेश में 2011–12 में 6590 हेक्टेयर था, जो 2014–15 में बढ़ कर 17750 हैक्टेयर हो गया अर्थात ढाई गुना से अधिक क्षेत्र बढ़ गया हैं वहीं उत्पादन 2011–12 में 0.05 लाख मैट्रिक टन था जो 2014–15 में बढ़ कर 2.08 लाख मैट्रिक टन हो गया अर्थात 40 गुना उत्पादन में वृद्धि हुई है। देश में 11 प्रतिशत भागीदारी के साथ वर्तमान में म.प्र. फूलों के उत्पादन में तीसरा स्थान रखता है। 2 लाख रूपये से 5 लाख रूपये प्रति हेक्टेयर कमाई होने से किसानों का रूझान फूलों की खेती में बढ़ता जा रहा है। छोटी जोत व्यवस्था के फायदे, तथा निर्यात की अगाध संभावना के कारण छोटे तथा सीमांत किसान फूलों की खेती की ओर अग्रसर हुए हैं। बढ़ती मांग के कारण उत्पादन भी बढ़ा है।

*** मध्यप्रदेश में उद्यानिकी संबंधित योजनाओं की प्रगति :**

मध्यप्रदेश में पिछले कुछ वर्षों में उद्यानिकी क्षेत्र में सरकार द्वारा किये गये प्रयासों से उद्यानिकी कृषि का परिदृश्य ही बदल गया हैं। बड़ी तेजी से उद्यानिकी क्षेत्र एवं उत्पादन में विस्तार हुआ है। तथा घरेलू मांग एवं निर्यात मांग के अनुरूप उत्पादन में परिवर्तन हुआ है। मध्यप्रदेश में उद्यानिकी संबंधित योजनाएँ एवं उनकी प्रगति को तालिका क्र. 9 द्वारा दर्शाया गया है :–

तालिका क्र. 9 मध्यप्रदेश में उद्यानिकी संबंधित योजनाओं की प्रगति

क्र.	योजना का नाम	इकाई	2014–15	2015–16
1	फल रोपण	हेक्ट.	10299	10551
2	सब्जी का क्षेत्र विस्तार	हेक्ट.	13003	13217
3	मसालों का क्षेत्र विस्तार	हेक्ट.	12426	12280
4	सुगंधित और औषधीय पौधों का क्षेत्र विस्तार	हेक्ट.	4739	2223
5	वाणिज्यिक फसलों की खेती–पॉली हाउस	स्क्वेयर कि. मी.	471810	813400
6	वाणिज्यिक फसलों की खेती–घास–पात से ढँकना।	स्क्वेयर कि. मी.	1403	70425
7	कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देना।	नंबर	585	435
8	बादी रसोई गार्डन के लाभार्थियों को बीज पैकेट वितरण।	नंबर	939081	1063480
9	एकीकृत बागवानी विकास मिशन	–	–	–
A	शीतगृह	नंबर	13	5
B	प्याज का भण्डारण	नंबर	220	163
C	पैंकिंग के लिए घर	नंबर	93	10
D	रिकिलिंग चेयर	नंबर	–	2
E	कोल्ड चेन	नंबर	–	1
10	लघु सिंचाई (PMKSY)	–	–	–
A	टपकन (ड्रिप) सिंचाई	हेक्ट.	19775.75	14944.45
B	छिड़कने वाला साधन	हेक्ट.	4307	2675.98
C	लघु सिंचाई (MIDH)	हेक्ट.	10.97	531.39
D	लघु सिंचाई (RKVY)	हेक्ट.	2000	1996
	कुल	हेक्ट.	26994.63	20147.82
11	खाद्य प्रसंस्करण इकाई	नंबर	27	7

12	खाद्य प्रसंस्करण इकाई को अनुदान	(करोड़ रूपये में)	10	2.9
13	फसल बीमा योजना – लाभार्थी किसानों की संख्या	–	16535	79149

स्त्रोत :– उद्यानिकी विभाग मध्य प्रदेश, म.प्र. कृषि आर्थिक सर्वेक्षण, 2016, पृष्ठ क्र. 68.

उद्यानिकी क्षेत्र एवं उत्पादन में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारण मध्यप्रदेश शासन द्वारा चलाई जा रही योजनाएँ है। तालिका क्र. 9 से स्पष्ट है कि 2014–15 एवं 2015–16 में विभिन्न योजनाओं में फल रोपण, सब्जी, मसाला, औषधीय एवं सुगंधित फसलों के क्षेत्र का विस्तार, पॉली हाउस, बीज पैकेट वितरण, कृषि मशीनीकरण, शीत गृह, भण्डारण, खाद्य प्रसंस्करण इकाई, अनुदान, फसल बीमा योजना से किसानों को लाभ आदि से मध्यप्रदेश उद्यानिकी क्षेत्र में तेजी से प्रगति हो रही है।

* निष्कर्ष एवं चुनौतियाँ :

समग्र विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि मध्यप्रदेश उद्यानिकी में देश में चौथे स्थान के साथ प्रगति के परिवर्तन का प्रवाह हो चुका हैं। मध्यप्रदेश का किसान केवीके की मदद से वैज्ञानिक कृषि की ओर बढ़ रहा है। फल पौध रोपण, सब्जी, मसाला, औषधीय एवं सुगन्धित फसल क्षेत्र विस्तार, उच्च शंकर बीज, उर्वरक, सिंचाई, बिजली, मशीनीकरण, वित्त विपणन, भण्डारण, शोध एवं तकनीक में सुधार, समृद्ध कृषि जैव विविधता, दोहरी फसल, उन्नत कृषि मण्डी इत्यादि के कारण मध्यप्रदेश उद्यानिकी ने पिछले छः वर्षों में तीन गुना क्षेत्रफल वृद्धि, चार गुना उत्पादन वृद्धि एवं कृषि में दस गुना निर्यात वृद्धि की है किन्तु इन मजबूत उपलब्धियों के बावजूद मांग एवं पूर्ति में असंतुलन, जोत के टेड़े–मेड़े आकार, छोटे एवं मझोले किसानों का बाहुल्य, दो तिहाई फसली क्षेत्र का अभी भी मानसून पर निर्भर होना, भू–जल स्तर की गिरावट, प्राकृतिक आपदा, कृषि से आय का निम्न स्तर, उर्वरक का कम इस्तेमाल, सड़क घनत्व की कमी, कृषि शोध, शिक्षा एवं विस्तार में कम निवेश आदि समस्याएँ हैं जिन्हें दूर करना होगा।

मांग के अनुसार पूर्ति, दोहरी फसल क्षेत्र, ड्रिप और स्प्रींकल सिंचाई के साथ सिंचाई का दायरा, पोली एवं ग्रीन हाउस में सुरक्षित खेती, जैविक खेती, ई–खेती, कृषि उत्पादकता, कृषि व्यापार क्षेत्र इत्यादि बढ़ाना तथा सभी किसानों को केसीसी योजना में लाना आदि अनेक संभावनाओं के साथ कृषि विकास दर को बनाये रखना, कृषि उत्पाद के लिए उचित भाव, कृषि को लगातार लाभकारी बनाये रखना, भूमिहीन किसान की उधारी की समस्या, उच्च गुणवत्ता के बीज उर्वरक की आपूर्ति, सुदूर खेत तक तकनीक एवं सिंचाई पहुँचाना, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, जोखिम एवं आपदा प्रबंधन आदि अनेक चुनौतियाँ हैं जिनसे निपटना होगा तभी मध्यप्रदेश उद्यानिकी कृषि क्षेत्र एवं अर्थव्यवस्था में स्वर्णिम ऊँचाईयों को छू सकेगी।

* संदर्भ सूची

सिंह सुनील कुमार, 'कृषि क्षेत्र में नई क्रांति–ई खेती', कुरूक्षेत्र, अक्टूबर, 2011
वर्मा प्रशांत कुमार, 'कृषि तथा सम्बद्ध क्षेत्रों में उद्यमता' कृषि सेवा, 28 अगस्त, 2012
Indian Horticulture Database - 2014, Ministry of Agriculture Govt. of India.
Horticulture Statistical year book, India 2015, Govt. of India, Ministory of Statistics and Programme Implementation.
Horticulture 2014-15 (Final), Summary (2), National Horticulture Board.
कृषि : कम से अधिक की प्राप्ति, आर्थिक समीक्षा 2015–16, अध्याय 4, पृष्ठ क्र. 68 से 83.
Economics Survey 2016-17 an overview, March 19, 2016 drishtiias.com
अवलोकन, म.प्र. कृषि आर्थिक सर्वेक्षण 2016, पृष्ठ क्र. (III) (IV) योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग म.प्र. शासन।
राष्ट्रीय संदर्भ में कृषि, म.प्र. का कृषि आर्थिक सर्वेक्षण 2016, पृष्ठ क्र. 1 से 3
एस.डब्ल्यू.ओ.सी. विश्लेषण, म.प्र. कृषि आर्थिक सर्वेक्षण अध्याय दस, पृष्ठ क्र. 143 से 147
Development update by World Bank, 2015
म.प्र. दृष्टि–पत्र 2018, विकास, परिवर्तन और सुशासन की कार्य योजना।
प्रशासनिक प्रतिवेदन वर्ष 2012–13, 2013–14, 2014–15 उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग, म.प्र. शासन।
'मुख्य सचिव ने बताया बीमारू राज्य से बेस्ट पर फार्मर कैसे बना मध्यप्रदेश, नई दुनिया 23 अक्टूबर 2016 पृष्ठ क्र. 13
'150 साल में पहली बार ब्रिटेन से आगे भारतीय अर्थव्यवस्था', नईदुनिया, 22 दिसम्बर, 2016, पृ. क्र. 10
'भोपाल इंदौर हाइवे सब्जी फल–फूलों का कारीडोर, नईदुनिया, 8 अक्टूबर 2014, पृष्ठ क्र. 02
2016–17 में रिकार्ड खाद्यान्न उत्पादन, नईदुनिया 22 दिसम्बर 2016, पृष्ठ क्र. 10.
m.p.horticulture.gov.in
nhb.gov.in
mpkrishi.mp.gov.in
indiabudget.nic.in
krishiseva.com